वैदिक विज्ञान की ओर.....

6

आप यह सोच रहे होंगे कि वैदिक थ्योरी ऑफ यूनिवर्स की बात करते-२ मैं मत-पन्थों की चर्चा क्यों करने लगा? इस विषय में मैं संसार को अवगत कराना चाहता हूँ कि विश्व में कोई भी मत, पन्थ वा सम्प्रदाय ऐसा नहीं, जिसका अपना कोई दार्शनिक आधार न हो। और ऐसा कोई दर्शन नहीं, जहाँ सृष्टि तथा सृष्टि के रचयिता की चर्चा न हो। बौद्ध व जैन मत तथा अन्य नास्तिक मत अवश्य रचयिता की चर्चा नहीं करते परन्तु वे भी अपने ढंग से सृष्टि निर्माण व कर्मफल व्यवस्था की चर्चा अवश्य करते हैं। सभी सम्प्रदायों में दर्शायी सृष्टि प्रक्रिया में परस्पर अनेकों मतभेद हैं। मेरा मत है कि इन मतभेदों का होना ही मानव-२ के बीच खड़ी घृणा व वैमनस्य की दीवारों का सबसे प्रमुख व मूल कारण है। उधर आधुनिक भौतिक विज्ञान अथवा कॉस्मोलॉजी, जो प्रयोग, प्रेक्षण व गणितीय व्याख्याओं का दम्भ भरता है, में भी वैज्ञानिकों की अनेकों परस्पर विरोधी थ्योरीज् खूब चल रही हैं। सर्वत्र कल्पनाओं का बाजार गर्म है। कोई भी इस बात पर विचार नहीं करता है कि जब सृष्टि एक है, तब उसके बनने की पृथक्-२ थ्योरीज् कैसे हो सकती हैं? फिर चाहे वे साम्प्रदायिक दर्शन हों अथवा आधुनिक विज्ञान। इतना अवश्य है कि वैज्ञानिक पृथक्-२ थ्योरी रहते हुए भी परस्पर खून नहीं बहाते हैं, एक-दूसरे की बात सुनते व कान्फ्रेंस करते हैं परन्तु समुदायों में बंटे विद्वान् परस्पर मार-काट मचाते वा ऊँच नीच, भेदभाव की दीवारें खड़ी करते हैं। इसी कारण मैं वैदिक थ्योरी ऑफ यूनीवर्स की भूमिका के रूप में इस पृथ्वी के मानव ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड के सभी बुद्धिमान् प्राणियों की एकता तथा अन्य सभी प्रकार के प्राणियों के कल्याण की बात करता हूँ, क्योंकि हम सभी इस सृष्टि रूपी मां तथा इसके रचयिता रूपी पिता की सन्तान हैं।

क्रमशः.....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक